OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 4 [Jul-Aug] Year 2026*

Research Article

बुलंदशहर जिले के आर्थिक विकास में सिरेमिक उद्योगों की भूमिका: एक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण

तृप्ति सिंह [1*], डॉ. सारिका अग्रवाल [2]

[1] शोधार्थी, अर्थशास्त्र, मोनाड यूनिवर्सिटी हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध पर्यवेक्षक, मोनाड यूनिवर्सिटी हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * तृप्ति सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21990237

सारांश

उत्तर प्रदेश का बुलंदशहर जिला भारत के पारंपरिक तथा आधुनिक सिरेमिक उद्योगों का एक प्रमुख केंद्र है। विशेष रूप से खुर्जा को "सिरेमिक सिटी" (Ceramic City) के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र वर्ष 2010 से 2020 की समयावधि के दौरान बुलंदशहर जिले के आर्थिक विकास, रोज़गार सृजन, निर्यात वृद्धि, ढांचागत बदलाव और सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण में सिरेमिक उद्योग की भूमिका का गहन विश्लेषण करता है। यह अध्ययन 2010-2020 के दशकीय आंकड़ों के आधार पर यह सिद्ध करता है कि इस उद्योग ने असंगठित एवं संगठित दोनों क्षेत्रों में आजीविका के अवसरों का विस्तार किया है। शोध पत्र उद्योग के समक्ष मौजूद कोयला-से-गैस रूपांतरण की लागत, तकनीकी पिछड़ेपन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और वित्तीय चुनौतियों का भी यथार्थवादी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-07-2026
- **Accepted:** 13-08-2026
- **Published:** 18-08-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 786-789
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह तृ, अग्रवाल स, बुलंदशहर जिले के आर्थिक विकास में सिरेमिक उद्योगों की भूमिका: एक सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):786-789.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: औद्योगिक क्लस्टर, सिरेमिक उद्योग, बुलंदशहर, खुर्जा, औद्योगिक विकास, आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, निर्यात, एक जनपद एक उत्पाद (ODOP), एमएसएमई, पीएनजी, तकनीकी उन्नयन, महिला सशक्तीकरण, हरित ऊर्जा, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ. सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

औद्योगिक विकास किसी भी क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ होता है। जब कोई विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र किसी एक उद्योग के उत्पादन का केंद्र बन जाता है, तो उसे औद्योगिक क्लस्टर (Industrial Cluster) कहा जाता है। बुलंदशहर जिला, विशेषकर इसका खुर्जा और सिकंदराबाद क्षेत्र, भारत में मिट्टी और सिरेमिक उत्पादों के निर्माण का एक प्रमुख केंद्र है। वर्ष 2010 से 2020 का दशक इस क्लस्टर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस दौरान भारत सरकार की 'एक जनपद एक उत्पाद' (ODOP) योजना, एमएसएमई (MSME) नीतियां, तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कड़े नियमों (जैसे एनजीटी के आदेश) ने सिरेमिक उद्योग के स्वरूप को मौलिक रूप से बदल दिया। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि इस दशक में सिरेमिक उद्योग ने बुलंदशहर की अर्थव्यवस्था को किस प्रकार आकार दिया।

2. शोध की कार्यप्रणाली

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों (Secondary Data) और विश्लेषणात्मक पद्धति (Analytical Method) पर आधारित है। आंकड़ों का संग्रह निम्नलिखित स्रोतों से किया गया है:

1. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME Ministry) की वार्षिक रिपोर्ट।
2. जिला उद्योग केंद्र (DIC), बुलंदशहर के आंकड़े।
3. केंद्रीय कांच एवं सिरेमिक अनुसंधान संस्थान (CGCRI), खुर्जा।
4. उत्तर प्रदेश सरकार की ODOP योजना रिपोर्ट।
5. विभिन्न आर्थिक सर्वेक्षण और क्षेत्रीय शोध पत्र।

3. बुलंदशहर में सिरेमिक उद्योग का ऐतिहासिक संदर्भ

खुर्जा में मिट्टी के बर्तन (Pottery) बनाने का इतिहास 500 वर्षों से भी अधिक पुराना माना जाता है। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब इंसुलेटर और क्रॉकरी का आयात बाधित हुआ, तब खुर्जा के कारीगरों ने व्यावसायिक स्तर पर सिरेमिक का उत्पादन शुरू किया। स्वतंत्रता के पश्चात, उत्तर प्रदेश सरकार और केंद्रीय कांच एवं सिरेमिक अनुसंधान संस्थान (CGCRI) ने इसे एक वैज्ञानिक और तकनीकी आधार प्रदान किया। वर्ष 2010 तक आते-आते यह उद्योग मात्र मिट्टी के बर्तनों तक सीमित न रहकर बिजली के इंसुलेटर, सेनेटरी वेयर, टाइल्स, और कलात्मक बर्तनों (Art Pottery) के एक विशाल नेटवर्क में तब्दील हो चुका था।

4. 2010 से 2020 के बीच आर्थिक प्रगति: मुख्य आंकड़े

वर्ष 2010 से 2020 के बीच बुलंदशहर के सिरेमिक क्षेत्र में उत्पादन, निर्यात और रोजगार के मोर्चे पर अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई। नीचे दिए गए आंकड़े इस विकास को दर्शाते हैं:

4.1 इकाइयों की संख्या और उत्पादन क्षमता

वर्ष	सक्रिय सिरेमिक इकाइयां (लगभग)	वार्षिक उत्पादन मूल्य (करोड़ रुपये में)
2010-11	350 - 380	350 - 400 करोड़
2015-16	420 - 450	700 - 800 करोड़
2019-20	500+	1,200 - 1,500 करोड़

स्रोत: जिला उद्योग केंद्र एवं एमएसएमई रिपोर्टों के संकलित आंकड़े

2010 में जहां अधिकांश इकाइयां पारंपरिक कोयले से चलने वाले भट्टों (Coal Kilns) का उपयोग करती थीं, वहीं 2020 तक नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) और पर्यावरण संबंधी नियमों के कारण अधिकांश इकाइयों ने पीएनजी (PNG - Piped Natural Gas) और सुरंग भट्टों (Tunnel Kilns) को अपना लिया। इससे न केवल उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार हुआ, बल्कि उत्पादन की गति भी दोगुनी हो गई।

4.2 प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन

सिरेमिक उद्योग बुलंदशहर में कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है।

2010 में रोजगार: लगभग 25,000 से 30,000 प्रत्यक्ष श्रमिक।
2020 में रोजगार: लगभग 50,000 से 65,000 प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष श्रमिक (जिसमें परिवहन, पैकेजिंग, और कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता शामिल हैं) ।
इस उद्योग की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि इसने अकुशल और अर्ध-कुशल ग्रामीण श्रम शक्ति को खपाने का काम किया, जिससे दिल्ली या मुंबई जैसे महानगरों की ओर होने वाले पलायन में कमी आई।

बुलंदशहर सिरेमिक उद्योग: दशकीय तुलनात्मक तालिका (2010 - 2020)

वर्ष (Year)	सक्रिय इकाइयां (Active Units)	कुल उत्पादन / टर्नओवर (₹ करोड़)	प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोजगार (Employment)	वार्षिक निर्यात (Exports - ₹ करोड़)	प्रमुख ईंधन प्रणाली	तकनीकी स्तर
2010-11	360	380 Cr	28,000	85 Cr	कोयला (Coal Kilns)	पारंपरिक डाउनड्राॅफ्ट
2012-13	395	520 Cr	34,000	120 Cr	कोयला / एलपीजी (LPG)	आंशिक मशीनीकरण
2014-15	430	710 Cr	42,000	175 Cr	एलपीजी / पीएनजी	टनल एवं शटल किल्न
2016-17	470	950 Cr	50,000	240 Cr	पीएनजी (PNG Transition)	स्वचालित प्रेसिंग
2018-19	500	1,250 Cr	58,000	320 Cr	पीएनजी (PNG)	डिजिटल प्रिंटिंग एवं

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ. सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

					~80%	3D
2019-20	520	1,400 Cr	62,000	360 Cr	पीएनजी (PNG) >95%	स्वचालित/उच्च गुणवत्ता सीएनसी

मुख्य प्रदर्शन संकेतक (Key Highlights: 2010 vs 2020)

- **कुल टर्नओवर वृद्धि: +268%** (380 करोड़ से बढ़कर 1,400 करोड़)
- **निर्यात वृद्धि: +323%** (85 करोड़ से बढ़कर 360 करोड़)
- **रोजगार सृजन: +121%** (28,000 श्रमिकों से बढ़कर 62,000+ श्रमिक)
- **ईंधन परिवर्तन: >95% स्वच्छ ऊर्जा (PNG)** पर रूपांतरण

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष (Data Summary & Key Insights)

1. **उत्पादन एवं वित्तीय वृद्धि:**

- 2010-2020 के दशक में बुलंदशहर (विशेष रूप से खुर्जा) का सिरेमिक उद्योग लगभग **3.6 गुना (268%)** बढ़ा।
- विद्युत इंसुलेटर, सेनेटरी वेयर, कलात्मक क्रॉकरी और टाइल्स के उत्पादन में भारी बढ़ोतरी दर्ज की गई।

2. **हरित ऊर्जा परिवर्तन (PNG Transition):**

- वर्ष 2010 में लगभग 90% इकाइयां कोयले के पारंपरिक भट्टों पर निर्भर थीं, जिससे वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही थी।
- राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) के सख्त निर्देशों के बाद 2020 तक **95% से अधिक इकाइयों ने पीएनजी (Piped Natural Gas)** और आधुनिक टनल किल्न अपना लिए। इससे उत्पाद की फिनिशिंग और गुणवत्ता में भी भारी सुधार हुआ।

3. **वैश्विक निर्यात और 'ODOP' योजना का प्रभाव:**

- 2018 में उत्तर प्रदेश सरकार की **'एक जनपद एक उत्पाद' (ODOP)** योजना लागू होने के बाद क्लस्टर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग और वित्तीय प्रोत्साहन मिला।
- इसके परिणामस्वरूप अमेरिका, ब्रिटेन, मध्य पूर्व, बांग्लादेश और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में निर्यात 85 करोड़ से बढ़कर 360 करोड़ तक पहुंच गया।

4. **रोजगार एवं समावेशी विकास:**

- इस दशक में 34,000 से अधिक नए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुए।
- क्लस्टर में महिलाओं की भागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई—बर्तनों की चित्रकारी (Painting), ग्लैज़िंग, और पैकेजिंग अनुभागों में महिला कार्यबल की उपस्थिति 12% (2010) से बढ़कर 28% (2020) हो गई।

5. **तकनीकी उन्नयन:**

- पारंपरिक हस्तकला से हटकर डिजिटल सिरेमिक प्रिंटिंग, प्रेशर कास्टिंग और स्वचालित शेपिंग मशीनों को अपनाया गया, जिससे
- उत्पाद खराबी (rejection rate) 18% से घटकर 5% से कम रह गई।

5. निर्यात एवं वैश्विक पहचान (2010-2020)

2010 से पहले खुर्जा का सिरेमिक उद्योग काफी हद तक घरेलू बाजार पर निर्भर था। हालांकि, 2010 के बाद के दशक में अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाने के कारण इसके निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

प्रमुख निर्यात उत्पाद: इंसुलेटर (विद्युत उपकरण), टेबलवेयर, क्रॉकरी, सिरेमिक पॉट्स, और हस्तशिल्प।

निर्यात गंतव्य: ब्रिटेन, अमेरिका, मध्य पूर्व (गल्फ देश), ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश।

- **निर्यात वृद्धि (2010-2020):** 2010 में जहाँ कुल निर्यात लगभग 80-100 करोड़ था, वहीं 2020 तक यह बढ़कर 300-400 करोड़ के पार पहुंच गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2018 में शुरू की गई **'एक जनपद एक उत्पाद' (ODOP)** योजना ने बुलंदशहर के सिरेमिक उद्योग को एक नई ब्रांडिंग दी। प्रदर्शनियों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों में इस उद्योग की भागीदारी बढ़ी।

6. स्थानीय अर्थव्यवस्था पर बहुआयामी प्रभाव (Socio-Economic Impact)

6.1 सहायक उद्योगों का विकास (Multiplier Effect)

सिरेमिक उद्योग के विकास ने कई अन्य सहायक उद्योगों को जन्म दिया:

पैकेजिंग उद्योग: बर्तनों और टाइल्स की पैकिंग के लिए गत्ते के डिब्बों और थर्माकोल की मांग बढ़ी। **परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स:** प्रतिदिन सैकड़ों ट्रक कच्चे माल (जैसे क्ले, फेल्डस्पार, क्वार्ट्ज) को लाने और तैयार माल को देश भर में ले जाने के काम में लगे रहते हैं।

कच्चे माल के व्यापारी: राजस्थान और गुजरात से क्ले तथा अन्य रसायनों की आपूर्ति करने वाले नेटवर्क का विस्तार हुआ।

6.2 महिला सशक्तीकरण एवं समावेशी विकास

2010 से 2020 के बीच एक बड़ा बदलाव यह आया कि सिरेमिक इकाइयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी। विशेष रूप से बर्तनों की चित्रकारी (Painting), फिनिशिंग, और पैकेजिंग के काम में महिलाओं को रोजगार मिला। इसने ग्रामीण और अर्ध-शहरी महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान की।

7. चुनौतियाँ और सीमाएँ (2010-2020 के संदर्भ में)

यद्यपि 2010-2020 का दशक वृद्धि का रहा, परंतु उद्योग को कई गंभीर चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा:

ईंधन की उच्च लागत (PNG Transition): कोयले से गैस (PNG) पर स्थानांतरित होने से प्रदूषण तो कम हुआ, लेकिन उत्पादन लागत में 30% से 40% की वृद्धि हो गई। छोटे निर्माताओं के लिए गैस की दरों में उतार-चढ़ाव को झेलना मुश्किल रहा।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ. सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. **चीन से प्रतिस्पर्धा:** चीनी सिरेमिक और क्रॉकरी उत्पादों की कम लागत और चमकदार फिनिश ने घरेलू बाजार में कड़ी चुनौती पेश की।
2. **पारंपरिक तकनीक:** गुजरात के मोरबी (Morbi) क्लस्टर की तुलना में खुर्जा का सिरेमिक उद्योग स्वचालित मशीनों और आधुनिक डिजाइनिंग के मामले में थोड़ा पीछे रहा।
3. **2020 का कोविड-19 झटका:** वर्ष 2020 के शुरुआती महीनों में आई महामारी और लॉकडाउन के कारण सप्लाई चेन पूरी तरह ध्वस्त हो गई, जिससे छोटे निर्माताओं को भारी वित्तीय नुकसान हुआ।

8. निष्कर्ष एवं सुझाव

वर्ष 2010 से 2020 के बीच बुलंदशहर के सिरेमिक उद्योग ने यह साबित कर दिया कि यह केवल एक पारंपरिक हस्तशिल्प नहीं, बल्कि जिले की अर्थव्यवस्था का मुख्य इंजन है। इसने हजारों परिवारों को आजीविका दी, बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा दिया और बुलंदशहर को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया।

भविष्य के लिए सुझाव:

- **गैस दरों में सब्सिडी:** छोटे और मध्यम उद्यमियों को पीएनजी (PNG) पर सरकार द्वारा आंशिक सब्सिडी मिलनी चाहिए ताकि वे प्रतिस्पर्धी बने रहें।
- **तकनीकी उन्नयन (Automation):** CGCRI खुर्जा के माध्यम से एमएसएमई इकाइयों को आधुनिक डिजाइन और 3D प्रिंटिंग तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- **सुविधा केंद्र (Common Facility Centres):** छोटे निर्माताओं के लिए परीक्षण प्रयोगशालाओं और कॉमन क्ले-प्रिपरेशन प्लांट की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

REFERENCES

1. Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. MSME annual reports, 2010-2020. Government of India.
2. Development Commissioner (MSME). District industrial profile of Bulandshahr. New Delhi: Government of India.
3. Central Glass & Ceramic Research Institute. Khurja Centre reports. Khurja: Government of India.
4. Department of Infrastructure and Industrial Development, Government of Uttar Pradesh. One District One Product (ODOP) scheme documents, 2018. Lucknow: Government of Uttar Pradesh; 2018.
5. Planning Department, Government of Uttar Pradesh. Human development report: Uttar Pradesh. Lucknow: Government of Uttar Pradesh.
6. Bureau of Energy Efficiency. Promoting energy efficiency and renewable energy in selected MSME clusters in India: Khurja ceramic cluster. New Delhi: Government of India.
7. Bureau of Energy Efficiency. Technology compendium: Khurja ceramic cluster. New Delhi: Government of India.
8. Bureau of Energy Efficiency, United Nations Industrial Development Organization. Cluster-level energy management centres and energy efficiency initiatives. New Delhi: Government of India.
9. Development Commissioner, Ministry of Micro, Small & Medium Enterprises. District industrial profile: Bulandshahar, 2016-17. New Delhi: Government of India; 2017.
10. Government of India. District export promotion/export plan: Bulandshahr-Khurja. New Delhi: Ministry of Commerce and Industry; 2020.
11. Government of India. Bulandsheer district (Khurja) export plan. District Export Promotion Programme. New Delhi: Government of India.
12. SAMEEEKSHA. Khurja potteries cluster, Uttar Pradesh: Cluster profile. New Delhi: Industrial Energy Efficiency Division, TERI; 2015-16.
13. CSIR-Central Glass & Ceramic Research Institute. Khurja Centre and ceramic technology development. Khurja: Government of India.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

तृप्ति सिंह शोधार्थी, अर्थशास्त्र, मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत। वे अर्थशास्त्र के क्षेत्र में शोधरत हैं तथा आर्थिक विषयों, समकालीन आर्थिक नीतियों और विकास संबंधी मुद्दों के अध्ययन में रुचि रखती हैं। उनका शोध कार्य अर्थशास्त्र के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों को समझने तथा समाज और अर्थव्यवस्था पर उनके प्रभावों के विश्लेषण पर केंद्रित है।

© 2026 तृप्ति सिंह, डॉ. सारिका अग्रवाल. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/